NEERAJ®

दृश्य के माध्यम से समाज

(Society Through the Visual)

B.S.O.S.-185

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Harmeet Kaur*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

दृश्य के माध्यम से समाज
(Society Through the Visual)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

दृश्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन का परिचय
(Introduction to the Sociological Study of the Visual)

1. दृश्य के माध्यम से समाज को समझना 1
(Understanding Society Through the Visual)

2. दृश्यों को समझना 17
(Making Sense of Visuals)

समाजशास्त्र और फोटोग्राफी का प्रचलन
(Sociology and the Practice of Photograph)

3. फोटोग्राफी के माध्यम से छवि बनाना 31
(Image Making Through Photography)

4. फोटोग्राफी, स्वयं और समाज 45
(Photography, Self and Society)

5. एक शोध उपकरण के रूप में फोटोग्राफी 57
(Photography as a Tool of Research)

समाजशास्त्र में वीडियो और फिल्म (Video and Film in Sociology of Society)

6. वीडियो और फिल्म के माध्यम से प्रतिनिधित्व 72
(Representing Through Video and Film)

7. शोध उपकरण के रूप में फिल्म और वीडियो 91
(Film and Video as a Research Tool)

समाजशास्त्र, बहुसंचार साधन (मल्टीमीडिया) और हाइपर मीडिया
(Sociology, Multimedia and Hypermedia)

8. समाज, बहुसंचार साधन (मल्टीमीडिया) और अति संचार साधन (हाइपरमीडिया) 109
(Society, Multimedia and Hypermedia)

9. शोध के उपकरण के रूप में बहुसंचार साधन (मल्टीमीडिया) और अति संचार साधन (हाइपर मीडिया) 126
(Multimedia and Hypermedia as a Tool of Research)

■■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

दृश्य के माध्यम से समाज

(Society Through the Visual)

B.S.O.S.-185

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-अ

प्रश्न 1. ''दृश्य प्रभावी ढंग से सामाजिक जीवन की सामाजिक-सांस्कृतिक जटिलताओं को चित्रित करते हैं।'' आलोचनात्मक रूप से चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'पाठ्य बनाम दृश्य', पृष्ठ-6, प्रश्न 9

प्रश्न 2. फिल्म में सूचक की आवाज को शामिल करने के तरीकों की उपयुक्त चित्रों के साथ व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'सूचनादाता की आवाज को शामिल करने के विभिन्न तरीके', पृष्ठ-9, प्रश्न 14

प्रश्न 3. दृश्य पद्धति की उपयुक्तता की पहचान करने में शामिल प्रक्रियाओं पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-19, 'दृश्य पद्धति की उपयुक्तता', पृष्ठ-26, प्रश्न 5

प्रश्न 4. नृजातीय संबंधी फिल्में बनाने में मानवविज्ञानियों के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-31, 'नृवंशविज्ञान फिल्म निर्माण में मानवशास्त्रीय योगदान'

प्रश्न 5. फिल्म निर्माण में शामिल नैतिक मुद्दों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-35, प्रश्न 6

खण्ड-ब

प्रश्न 6. एक सामाजिक अनुसंधान में वीडियो-प्रौद्योगिकी का उपयोग करते समय सम्बोधित किए जाने वाले प्रमुख मुद्दों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-95, प्रश्न 4, पृष्ठ-96, प्रश्न 5

प्रश्न 7. समकालीन सामाजिक अनुसंधान में डिजिटल नृजाति के महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-73, 'अंकीय (डिजिटल) नृवंशविज्ञान', पृष्ठ-80, प्रश्न 7 तथा प्रश्न 8

प्रश्न 8. हाइपरमीडिया क्या है? इसकी प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-113, प्रश्न 6

प्रश्न 9. दृश्यपरक सामाजिक अनुसंधान में मल्टीमीडिया की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-130, प्रश्न 4

प्रश्न 10. दृश्यपरक नृजाति में प्रारंभिक मानवविज्ञानियों की रुचि पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-93, प्रश्न 1, 'दृश्यों में नृविज्ञान की रुचि'

■ ■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

दृश्य के माध्यम से समाज

(Society Through the Visual)

B.S.O.S.-185

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड में से दो प्रश्नों के उत्तर अवश्य दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खंड-I

प्रश्न 1. नृजाति क्या है? नृजाति में दृश्य के स्थान पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, नृवंशविज्ञान क्या है?' तथा पृष्ठ-3, प्रश्न 1

प्रश्न 2. सामाजिक विश्लेषण में दृश्यपरक समाजशास्त्र के महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-17, 'परिचय' तथा पृष्ठ-19, प्रश्न 1, 'दृश्य समाजशास्त्र'

प्रश्न 3. एक नृजातीय फिल्म के विभिन्न घटकों की उपयुक्त विवरणों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-40, प्रश्न 2

प्रश्न 4. स्वयं, समाज, फोटोग्राफी और व्यक्तिपरकता के बीच संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-45, 'फोटोग्राफी के माध्यम से समाज को समझना', 'फोटोग्राफी और विषयनिष्ठता'

प्रश्न 5. दृश्य डेटा संग्रह की विभिन्न युक्तियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-45, 'परिचय', पृष्ठ-46, 'दृश्य आँकड़े (डेटा) संग्रह की कार्यनीति'

खंड-II

प्रश्न 6. सामाजिक अनुसंधान में कैमरे की भूमिका और सीमाओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-57, 'कैमरा और अनुसंधान में इसकी भूमिका', पृष्ठ-59, प्रश्न 2 तथा पृष्ठ-60, प्रश्न 8

प्रश्न 7. सामाजिक अनुसंधान में वीडियो के लाभ और हानियों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-95, प्रश्न 4 तथा पृष्ठ-96, प्रश्न 5

प्रश्न 8. डिजिटल तकनीक ने नृजातीय अनुसंधान के पहलुओं को कैसे बदल दिया है, उपयुक्त उदाहरणों के साथ व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-80, प्रश्न 8

प्रश्न 9. फोटो वॉयस और फोटो इलिसिटेशन के बीच अंतर कीजिए और सामाजिक शोध में उनके उपयोग की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-111, प्रश्न 4, पृष्ठ-109, 'छायाचित्र निष्कर्षण (फोटो एलिसिटेशन)', 'छायाचित्र ध्वनि (फोटो साउंड)'

प्रश्न 10. मल्टीमीडिया, हाइपरमीडिया और समाज के बीच संबंधों की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-111, 'मल्टीमीडिया, हाइपरमीडिया और समाज के बीच संबंध' तथा पृष्ठ-120, प्रश्न 5

■■

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

दृश्य के माध्यम से समाज
(Society Through the Visual)

दृश्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन का परिचय
(Introduction to the Sociological Study of the Visual)

दृश्य के माध्यम से समाज को समझना
(Understanding Society Through the Visual)

1

परिचय

दृश्य हमारे जीवन का हिस्सा माने गये हैं, इसलिए प्रत्येक समाज में दृश्य सांस्कृतिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ दृश्यों का नवीन रूप फोटोग्राफ, फिल्म, वीडियो क्लिप आदि के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि ये दृश्य तीव्रता से हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं, इसलिए इनके प्रभाव को हमारी संस्कृतियों और पहचान को नकारा नहीं जा सकता। प्रत्येक क्षेत्र में दृश्य व्यापकता के कारण अनुसंधान विशेष रूप से नृवंशविज्ञान अनुसंधान का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र माना गया है। पिंक (2001) के अनुसार, नृवंशविज्ञान में ध्वनियाँ, शब्द और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के किसी भी माध्यम के रूप में दृश्यों का होना अपरिहार्य है। दृश्य नृविज्ञान अवलोकन की प्रक्रिया का नतीजा माना गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

नृवंशविज्ञान क्या है?

पिंक 2013 के अनुसार, नृवंशविज्ञान ज्ञान की उत्पत्ति और प्रतिनिधित्व करने की प्रक्रिया है, जिसमें संस्कृतियाँ और समाज शामिल हैं। नृवंशविज्ञान नृवंशविज्ञानियों के वास्तविक अनुभवों पर आधारित है, जो कि "उस संदर्भ, संधिक्रमों और अंत:विषयनिष्ठता के प्रति यथासंभव निष्ठावान होते हैं, जिनके माध्यम से ज्ञान की उत्पत्ति हुई थी।" नृवंशविज्ञान एक दृश्य के समान है। दृश्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में होते हैं; जैसे कि जेंडर असमानता के अन्य लिंगों को छोड़कर पुरुष और महिलाओं के जेंडर द्विगुण या युग्म को माना जाता है। नारीवादी और लैंगिकता आंदोलन इन मुद्दों पर हमारा ध्यान केंद्रित करता है। समाज में सत्ता के मुद्दों से दृश्य का निकट संबंध है। इसमें मानदंड दृश्यमान और सीमांत अदृश्य है, जैसे कि कलाकृतियाँ, रोजमर्रा की प्रथाएँ और अनुष्ठान, पाठ्य, तस्वीर और फिल्म संलग्न आदि।

प्रौद्योगिकी की भूमिका

तकनीकी विकास के कारण कैमरे कम हो गए। इनकी जगह फिल्मांकन और फोटोग्राफी ने ली क्योंकि शुरू में कैमरे महंगे थे और आवाज रिकॉर्ड नहीं होती थी। तकनीकी विकास ने ये दोनों कार्य दृश्य और आवाज रिकॉर्ड सरल और सस्ते बना दिए। दृश्य नृविज्ञान में ये सहायक बने। इस प्रकार नृवंशविज्ञान को छवियों और फिल्मों का रूप माना जाता है।

क्या है जो दृश्य नृवंशविज्ञान बनाता है?

क्या लोगों द्वारा खींची गई निजी तस्वीरों और व्यक्तिगत घरेलू वीडियो नृवंशविज्ञान है? हीडर 2006 और पिंक 2013 के अनुसार, एथनोग्राफिक शब्द का प्रयोग किसी भी छवि या फिल्म के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता। इसके प्रयोग द्वारा व्यक्तिगत तस्वीरों, घरेलू वीडियो, वृतचित्र, फिल्में, नृवंशविज्ञानियों या अन्य द्वारा खीचीं गई तस्वीरें, समाज और संस्कृतियों को समझने हेतु किया जा सकता है। एक ही दृश्य के विभिन्न दृष्टिकोण हो सकते हैं, इसलिए उस स्थिति की व्याख्या महत्त्वपूर्ण है।

नृविज्ञान में फिल्मों और फोटोग्राफी का विकास

मानव विज्ञानी ब्रोनिस्लाव मैलिनोवस्की इस क्षेत्र में पहले व्यक्ति थे। उनके मोनोग्राफ में तस्वीरें थीं; परंतु उन पर विश्लेषण नहीं किया गया था। केवल नृवंशविज्ञान के उपयोग तक ही सीमित था। इसे सिर्फ क्षेत्र कार्य और टिप्पणी के आधार पर वास्तविक नृवंशविज्ञान माना जाता था। फिल्मों को इनकी अपेक्षा बेहतर माना जाता था, परंतु ये नृवंशविज्ञान के सिद्धांत के विकास के लिए काफी नहीं थे। मार्गरेट मीड और जीन रोच द्वारा 1950 के दशक

में नृवंशविज्ञान ने सिनेमा के महत्त्व को सिद्ध और स्थापित किया। एक खनन इंजीनियर रॉबर्ट फ्लेहर्टी द्वारा 1922 में ''नानूक ऑफ द नार्थ'' का फिल्मांकन किया गया। पश्चिमी समोआ में सवाईम पर 'मोआना : ए रोमांस ऑफ द गोल्डन एज' फिल्म 1926 में मानवविज्ञानी मार्गरेट मीड समोआ किया गया, द्वारा तीन सौ मील से भी कम दूरी पर किया गया। हडसन बे इनुइट पर फिल्म बनी। हालांकि नानूक फिल्मांकन करीबी से फ्रांज बोअस द्वारा किया गया। परंतु मीड और बोअस द्वारा इन फिल्मों को कोई महत्त्व नहीं दिया गया।

प्रारंभिक अन्वेषक (पायनियर)

सबसे पहले तस्वीरें और फिल्मों की शूटिंग का कार्य अल्फ्रेड कार्ट हैडॉन, वाल्टर बाल्डविन स्पेंसर और फ्रैंक गिलन द्वारा किया गया। 1898 में मेर आइलैंडर्स और ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों की फुटेज शुरू करने वाले पहले व्यक्ति थे। 1901 में वाल्टर बाल्डविन स्पेंसर द्वारा अर्रेन्टे और फ्रैंक गिलन ने आदिवासियों पर अध्ययन का फिल्मांकन किया। इनके सहयोग से अर्रेन्टे ने आदिवासियों पर तेरह फिल्में बनाईं। फिल्मों की नूतनता और फिल्मांकन उपकरणों का महंगा होना 20वीं शताब्दी में दृश्य विधियों की अलोकप्रियता का कारण बना।

उपकरणों में खराबी, भारी होना अन्य समस्या थी क्योंकि नृत्य मूल्यांकन में नर्तक कैमरा रेंज से बाहर होने पर कैमरा उनकी गतिविधियों को फिल्माने में असमर्थ था, इसलिए उनकी वैयक्तिकता खत्म हो गई। इसलिए मानवविज्ञानी इन्हें नृत्य अनुष्ठान में फिल्माते थे।

पाठ्य बनाम दृश्य

दृश्य विधियों का उपयोग ज्ञान-मीमांसा चिंताओं के कारण कम हुआ। सामाजिक जीवन की सामाजिक-सांस्कृतिक जटिलता को चित्रों की अपेक्षा लिखित ग्रंथों द्वारा बेहतर ढंग से समझाया गया। ग्रिफिथ्स 2002 के अनुसार दर्शन छवि जैसी व्याख्या करने में स्वतंत्र थे, इसलिए फिल्मों और दृश्यों को मानवविज्ञानी की सत्ता का अवमूल्यन करने वाला था।

प्रत्यक्षवादी अभिविन्यास वाले मानवविज्ञानी तस्वीरों को फिल्मों की अपेक्षा बेहतर समझते थे क्योंकि उन्हें शीर्षक और पुन: शीर्षक दिया जा सकता था। उपशीर्षक द्वारा मानवशास्त्रीय अर्थों को दर्शकों तक आसानी से पहुँचाया जा सकता था। हालांकि मार्गरेट मीड की 'ट्रान्स एंड डांस इन बाली' 1952 की फिल्म में व्याख्यान बहुत कठिन था। मैकडॉगल 1997 द्वारा यह तर्क दिया गया कि मानवशास्त्रीय सिद्धांत में परिवर्तन नृवंशविज्ञान में दृश्य विधियों के उपयोग की कमी का कारण था। वंशावली पद्धति और मौखिक अभिलेखों के साथ एक नोट बुक का प्रयोग किया गया। क्षेत्रकार्य से कैमरे को बाहर किया गया क्योंकि अब तस्वीरें संग्रहालयों तक सीमित थीं।

मार्गरेट मीड का योगदान

मार्गरेट मीड और ग्रेगरी बेटसन द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बालिनी लोगों का अध्ययन किया गया और इस विचार में एक परिवर्तन में चिहिंत किया गया। मीड फ्रांज बोअस और हर्बर्ट स्पेंसर की प्रत्यक्षवादी मानवशास्त्रीय परंपरा में कैमरा उद्देश्यपूर्ण रूप में माना गया था क्योंकि कैमरा वास्तविक घटनाओं को रिकॉर्ड करता था।

मीड के पद्धति संबंधी दृष्टिकोण में नृवंशविज्ञान, फिल्म निर्माण और सूचनादाता के बीच संबंध काफी महत्त्व रखते थे। मीड के अनुसार फिल्म योजना और संपादन प्रक्रिया में सूचनादाता शामिल हो सकते थे, इसी तरह निर्माता की भूमिका प्रमुख थी। बाली पर अपने अध्ययन के लिए उन्होंने बाली निवासियों को ही विश्लेषक के रूप में प्रयोग किया। मीड सांस्कृतिक परिवर्तन और संस्कृति के पहलुओं को रिकॉर्ड करना फिल्मों से बेहतर मानती थीं। मीड के अनुसार नृवंशविज्ञानी द्वारा निर्देशित कैमरामैन का प्रयोग कर चित्रण और फिल्मांकन कार्यों को कौशलपूर्वक बेहतर बनाया जा सकता है।

बाली पर मीड और बेटसन का 1942 का अध्ययन दृश्य नृविज्ञान को एक ऐतिहासिक घटना माना गया है क्योंकि इसके बाद कैमरों का प्रयोग सीमित हुआ, बल्कि सूचनादाओं के दृष्टिकोण के महत्त्व को शामिल किया, परंतु उनकी समझ को नहीं दर्शाया गया। वे कैमरे को दीवार पर बैठी मक्खी मानते हैं, जो कि स्वचालित रिकार्डिंग के लिए अदृश्य रहता है।

सिद्धांत और फिल्मांकन के तरीकों में बदलाव

कैमरे का प्रयोग कार्यपद्धति के एक उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए, जो कि नृविज्ञान में सैद्धांतिक विकास का संकेत माना जाता है। नृविज्ञान सिद्धांत व्यापक रूप से विकासवाद से दृश्य के विश्लेषण दृष्टिकोण में परिवर्तन से संबंधित है। एक विश्लेषक के रूप में, जो कि अनुसंधान के परिणाम को प्रभावित नहीं कर सकता, यह धारणा अनुसंधान पर प्रभाव डालती है क्योंकि किसी क्षेत्र में खोज से पहले जानते नहीं, परंतु जो देखते, जिसे खोजना चाहते हैं, यह उसी का नतीजा होता है।

डेविड मैकडॉगल 1919 के अनुसार, दृश्य नृवंशविज्ञान में परिवर्तन एक वह मुद्दा है, जिसमें आवाज के कारण अधिक विकास हुआ है। फिल्म निर्माता और सूचनादाता को आवाज का यह संबंध जागरूकता के विकास को प्रभावित करता है क्योंकि मैकडॉगल 1991 और पिंक 2013 के अनुसार क्या सूचनादाता की आवाज का प्रवेश मूल निवासियों के दृष्टिकोण के प्रतिनिधित्व संबंधी मुद्दों को संबोधित करने के लिए काफी है। हालांकि, इसके अभाव की पूर्ति देसी व्याख्यान का उपयोग कर की जा सकती है। जैसे कि जीन रोच की 'ला चेस औ लायन ए.एल. आर्क/हंटिंग द लायन विद बो एंड एरो' 1965 और राबर्ट गार्डनर की 'डेड बर्ड्स' का 1963 में व्याख्यान किया गया।

सूचनादाता की आवाज को शामिल करने के विभिन्न तरीके

यदि कोई फिल्म सूचनादाता और फिल्म निर्माता के मन-मुटाव को उजागर करती है, तो फिल्मांकित विषय काफी महत्त्वपूर्ण हो

जाता है। इसके अभाव में एक अवलोकनात्मक फिल्म यथावत चित्रित की माँग करती है।

हालांकि एक व्यक्ति पर आधारित फिल्में उसके दृष्टिकोण द्वारा बनाई जाती हैं, परंतु अंतिम उत्पादन कुछ कारणों से प्रभावित होता है, जैसे कि–

1. अन्य लोगों की मौजूदगी का और फिल्म निर्माण प्रक्रिया पर उनका प्रभाव अंतिम परिणाम को प्रभावित कर सकता है।
2. लोगों को फिल्म बनाने की प्रक्रिया आकर्षित कर सकती है। उन्हें फिल्म निर्माता अनदेखा या शामिल कर सकता है। वे अंतिम परिणाम को प्रभावित करते हैं।
3. एक सूचनादाता स्वयं पर फिल्म फिल्माए जाने का विचार रख सकता है।
4. एक व्यक्ति फिल्म में पूरी तरह प्रभावी हो सकता है; जैसे कि 'डोन्ट लुक बैक' 1966 और बॉब डायलन पर मैकडॉगल 1991 में हावी होना।
5. फिल्म का अंतिम प्रभाव विशेष सामाजिक या सांस्कृतिक रूप में प्रभावित हो सकता है। जब फिल्मांकन निर्माता द्वारा दायरे में नहीं किया जाता।
6. सूचनादाता एक फिल्म का सक्रिय रूप में उपयोग कर सकता है क्योंकि निर्माता को फिल्माए गये लोगों द्वारा निर्देशित किया जाता है।
7. कई फिल्में अनुष्ठानों पर बिना अनुष्ठानों का महत्त्व समझे फिल्माई जाती हैं; जैसे कि मैकडॉगल 1991 द्वारा ऑस्ट्रेलिया में आदिवासी अनुष्ठानों का फिल्मांकन, इसलिए दर्शक के अनुसार फिल्म का महत्त्व अलग हो सकता है।

एक फिल्म के फिल्मांकन को प्रभावित करने वाले कारक

एक फिल्म के फिल्मांकन को नृवंशविज्ञानी के सामाजिक संबंध और गतिविधियाँ प्रभावित करती हैं। दृश्य शोधकर्त्ता के बीच संबंध भी प्रभावित कर सकते हैं। पिंक 2013 द्वारा बुल फाइट के फिल्मांकन और चित्रण समय सूचनादाताओं को शामिल किया गया, परंतु पश्चिमी अफ्रीका में फोटो प्रतिष्ठा का विषय माने गये, इसलिए फोटो शोधकर्त्ता और शोध विषय में असमान संबद्ध फिल्मांकन को प्रभावित करते हैं। इसलिए व्यावसायिक और सांस्कृतिक विचार समानता वाले होने चाहिए।

व्यष्टित्वों (आइडेंटीटीएस) लेंस के चश्मे से देखना

एक ही फिल्म की व्याख्या अलग-अलग तरीकों से की जाती है, इसलिए इसे वस्तुनिष्ठता की अपेक्षा वास्तविकता के रूप देखा जा सकता है। शोध प्रक्रिया के कई तत्व प्रभावित करते हैं, जैसे कि लिंग, वर्ग, जातीयता और प्रजाति। फिल्म निर्माण की प्रक्रिया को पहचान प्रभावित करती है, जैसे कि 1990 के दशक में जेंडर अनुसंधान, दृश्य का नृवंशविज्ञान पर प्रभाव पड़ता है।

दृश्य का कैमरे में चित्रण कैसा है, इसके लिए विशेष जागरूकता की जरूरत होती है। उस संस्कृति के बीच होने वाली दृश्य प्रतिनिधित्व एक जटिल अंतर्क्रिया का नतीजा है। इस प्रकार दृश्य प्रतिनिधित्व व्यावसायिक और व्यक्तिगत तत्वों का परिणाम बनते हैं, जैसे कि ओलंपिक की तस्वीरों में खेल में महिलाओं के नृवंशविज्ञानी क्षेत्र का समृद्ध स्रोत थे। इनमें हैं–जेंडर की पहचान, लैंगिकता, नस्ल, जातीयता और विभिन्न पहचानों के रूप। बार्डियू के अनुसार, व्यक्तियों द्वारा खीची गई तस्वीरें और चित्र समूह के साझे मानदंडों को दर्शाती हैं और साथ ही समूह की सोच, धारणा और प्रशंसा के विचारों को दर्शाते हैं। यह विशेष सांस्कृतिक रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कि साझी परंपरा के प्रतिबिंब होते हैं। नृवंशविज्ञान संबंधी खातों में घरेलू व्यक्तिगत फिल्म या तस्वीरों को शामिल किया जा सकता है, जो कि लैंगिक पहचान को दर्शाते हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. नृवंशविज्ञान क्या है?

उत्तर–नृवंशविज्ञान समाज, संस्कृति तथा व्यक्तियों से संबंधित ज्ञान उत्पन्न करने तथा प्रतिनिधित्व प्रक्रिया का साधन है। पिंक और सारा 2013 द्वारा नृवंशविज्ञान को पद्धति, संस्कृति, समाज के अनुभव, उसकी व्याख्या और उसका प्रतिनिधित्व करने के साधन के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसके अंतर्गत विभिन्न अनुशासनात्मक एजेंडा और सैद्धांतिक सिद्धांतों के रूप को सूचना देना या उनके द्वारा सूचित करना शामिल किया गया है। यह समाज की संस्कृति और व्यक्तियों की उत्पत्ति और प्रतिनिधित्व करने की एक प्रक्रिया है, जो कि नृवंशविज्ञानियों द्वारा किये गये वास्तविक अनुभवों पर आधारित है। यह वास्तविक अनुभव उस रूप, संधिक्रमों और अंत:विषय निष्ठता के प्रति यथासंभव निष्ठावान होते हैं, जिनके द्वारा ज्ञान का उद्‌भव हुआ था। नृवंशविज्ञान को किसी-न-किसी अर्थ में एक दृश्य माना गया है क्योंकि यह दृश्य प्रत्येक स्थान में पाये जाते हैं। इसलिए यह हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। हालांकि प्रत्येक समाजों में दृश्य संस्कृतियों और समाज का एक सार्वभौमिक और व्यापक हिस्सा माने गये हैं क्योंकि हमारे सामाजिक जीवन में इनकी विशेषता महत्ता है। इसलिए ये नृवंशविज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

इस प्रकार नृवंशविज्ञान में ध्वनि, शब्द, संस्कृति, अभिव्यक्ति हेतु किसी भी रूप में छवियों का होना अनिवार्य है क्योंकि एक दृश्य में जो हम देखते हैं। उसके साथ-साथ कुछ और भी होता है; जैसे कि जेंडर असमानता का मुद्दा, लिंग को लिंग द्विगुण या युग्म तक सीमित रखना, लैंगिकता को विषम लैंगिकता तक सीमित रखना। हालांकि ये पहलू हमारे सामाजिक जीवन का, हमारी दैनिक चर्या का एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं, परंतु फिर भी हम इसे देखते नहीं या देखकर अनदेखा कर देते हैं। विषम लैंगिकता को सिर्फ एक सोच और विश्वास की ऐसी संरचना तक सीमित किया गया है, जहाँ पुरुष-महिला के बीच संबंधों को यौन अभिविन्यास के सामान्य व्यवहार के रूप में देखा जाता है और सभी लिंगों को छोड़कर

सिर्फ पुरुष और महिलाओं के जेंडर द्विगुण या युग्म पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। महिलाओं को कम आंकना, उन्हें घर तक ही सीमित रखना या घरेलू उत्पीड़न होना आदि मुद्दे समाज में व्यापक रूप से फैले हुए हैं, घरेलू यह मुद्दे समाज में महत्ता नहीं रखते थे। हालांकि ये मुद्दे सिर्फ तब तक नजरअंदाज किये जाते रहे, जब तक इनसे निपटने का कोई प्रयास नहीं किया गया।

नारीवादी आंदोलनों और लैंगिकता से जुड़े आंदोलनों द्वारा प्रत्येक का ध्यान इन मुद्दों पर केंद्रित किया गया। इन दृश्यों का समाज में सत्ता के मुद्दों के साथ गहरा संबंध है। दृश्यता में मानदंड दृश्यमान और सीमांत दृश्य है। इसलिए नृवंशविज्ञान दृश्यों से पूरी तरह जुड़ा हुआ है क्योंकि ये अभिव्यक्तियों को चित्रण करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। विश्लेषण के क्षेत्र में संस्कृति के सभी दृश्यमान और अदृश्य पहलू हैं–कलाकृतियाँ, रोजमर्रा की प्रथाएँ, दैनिक दिनचर्या दिखती हैं, जो कि शोधकर्त्ता का महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। हमारे सामाजिक जीवन में लिखित ग्रंथ मौजूद हैं। पारंपरिक रूप से लिखे हुए ग्रंथों पर आधारित अध्ययन द्वारा संस्कृतियों को देखने, समझने और उनका अवलोकन करने में सहायता का प्रयास किया गया है। इन ग्रंथों में पाठ्य के साथ-साथ तस्वीर और फिल्म भी संलग्न होती हैं। इनके आधार पर फिल्मांकन किया जाता है। इस प्रकार नृवंशविज्ञान समाज, व्यक्ति और संस्कृति की वास्तविकता पर आधारित ज्ञान है, जिसे दृश्यों, शब्दों की अभिव्यक्ति और छवियों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

प्रश्न 2. दृश्यता समाज में सत्ता के मुद्दों से निकटता से जुड़ी हुई है, जो ....दृश्यमान है और .... अदृश्य है।

उत्तर–मानक, सीमांत।

प्रश्न 3. एक ही दृश्य की व्याख्या विभिन्न .... और .... से की जा सकती है।

उत्तर–कोणों, दृष्टिकोणों।

प्रश्न 4. वास्तव में जो महत्त्व रखता है वह है दृश्य की . ... और .... जिसमें यह स्थित है।

उत्तर–व्याख्या, संदर्भ।

प्रश्न 5. प्रौद्योगिकी में परिवर्तन ने फिल्म निर्माण को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर–प्रौद्योगिकी में परिवर्तन ने फिल्म निर्माण को व्यापक रूप से प्रभावित किया। आमतौर पर कोई भी परिवर्तन विकास की ओर ले जाता है। हालांकि सभी परिवर्तनों का परिणाम सकारात्मक नहीं होता है। प्रौद्योगिकी ने विकास होने के साथ-साथ फिल्म निर्माण को प्रभावित किया, जैसे कि–

1. तकनीकी प्रौद्योगिकी विकास,
2. अंकीय तकनीकी,
3. लोगों की रुचि का बढ़ना,
4. नई तकनीकी या किफायती होना,
5. फिल्मांकन में सुविधा होना।

1. तकनीकी प्रौद्योगिकी विकास–प्रौद्योगिकी में परिवर्तन का एक सकारात्मक रूप देखा गया। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी में विकास हुआ, कैमरे हल्के होते गये। उनका लोगों पर उतना प्रभाव नहीं रहा, बल्कि कैमरे की जगह फिल्मांकन और फोटोग्राफी ले ली। इस प्रकार तकनीकी विकास ने फिल्म निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित किया।

2. अंकीय तकनीकी–फिल्म निर्माण को अंकीय तकनीक द्वारा विशेष रूप से प्रभावित किया गया। अंकीय तकनीक को डिजीटल तकनीक कहा गया है। अंकीय तकनीक द्वारा कैमरे और रिकार्डर को ज्यादा सरल और सस्ता बनाया गया, जिससे फिल्म निर्माण प्रभावित हुआ, यह एक प्रौद्योगिकी परिवर्तन था।

3. लोगों की रुचि का बढ़ना–प्रौद्योगिकी परिवर्तन के कारण फिल्म निर्माण के प्रति लोगों की रुचि बढ़ने लगी क्योंकि कैमरे में वे सिर्फ दृश्यों को देख सकते थे। नई प्रौद्योगिकी के साथ लोगों को दृश्यों को देखने के साथ-साथ आवाज भी सुनाई दी। इससे लोगों में उत्सुकता बढ़ी और इससे फिल्म निर्माण प्रभावित हुआ।

4. नई तकनीकी या किफायती होना–प्रौद्योगिकी परिवर्तन यानी प्रौद्योगिकी का विकास कैमरे की अपेक्षा काफी सस्ता था क्योंकि शुरू-शुरू में कैमरे और कैमरे के रील काफी महंगे थे, ये ध्वनि को रिकॉर्ड करने में असक्षम थे। नई प्रौद्योगिकी इनके मुकाबले सस्ती थी। इसलिए प्रौद्योगिकी परिवर्तन द्वारा फिल्म निर्माण को प्रभावित किया गया।

5. फिल्मांकन में सुविधा होना–शुरू में कैमरा और कैमरा की रील महंगा होने के साथ-साथ भारी भी थी। दूसरे वे आवाज को रिकॉर्ड नहीं कर सकती थी। प्रौद्योगिकी के विकास द्वारा कैमरे ने दृश्य और ध्वनि दोनों को रिकॉर्ड करना शुरू कर दिया। अब कैमरे की जगह फिल्मांकन और फोटो खींचने की प्रक्रिया ने जोर पकड़ लिया। उन्हें फिल्मांकन में पहले की अपेक्षा अधिक सुविधा होने लगी। इस प्रकार प्रौद्योगिकी में परिवर्तन ने फिल्म निर्माण को पर अपना प्रभाव डाला। यह प्रभाव काफी बेहतर, सकारात्मक और प्रभावशाली था।

प्रश्न 6. रॉबर्ट फ्लेहर्टी द्वारा बनाई गई दो फिल्मों के नाम बताइए।

उत्तर–रॉबर्ट फ्लेहर्टी द्वारा दो फिल्में बनाई गईं। 1922 में पहली फिल्म 'नानूक ऑफ द नार्थ' तथा दूसरी फिल्म 1926 में मेआना : ए रोमांस ऑफ द गोल्डन एज' बनाई गई। राबर्ट फ्लेहर्टी एक खनन इंजीनियर था। रॉबर्ट फ्लेहर्टी द्वारा 'नानूक ऑफ द नार्थ' का फिल्मांकन फ्रांज बोअज के क्षेत्र कार्य के पास किया गया। इस फिल्म में रॉबर्ट फ्लेहर्टी द्वारा इनुइट के लोगों के जीवन को इस प्रकार चित्रित किया, जैसे कि उन्हें पहले कभी नहीं देखा गया। एक फिल्मकार के रूप में वे खरे उतरे। उन्होंने उत्तरदाताओं के जीवन में फिल्मकार की भूमिका क्या होती है, यह सफलतापूर्वक सिद्ध करके दिखाया। हालांकि रॉबर्ट फ्लेहर्टी पर अंधाधुंध मंचन